Title

हिन्दी साहित्य को
गुजरात के सन्त-कवियों की देन

म. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा

की

पीएच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत

अधिनिबन्ध

निर्देशक

डॉ. अम्बाशंकर नागर, एम. ए., पीएच. डी.
रीडर तथा अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग,
गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

अनुसन्धित्सु

रामकुमार गुप्त

भारतीय विद्याभवन, डाकोर.

१९६५

अकल कला खेलत नर ज्ञानी ।
जैसेहि नाव हिरे फिरे दसों, दिश,
ध्रुव तारे पर रहत निशानी ।।ध्रुव०।।

चलन वलन अवनी पर वाकी,
मन की सुरत अकाश ठहरानी ।
तत्त्व समास भयो है स्वतंतर,
जैसे हिम होत है पानी ।।अकल०।।१।।

छुपी आदि अनंत न पायो,
आइ न सकत जहाँ मन बानी ।
ता घर स्थिती भई है जिनकी,
कही न जात ऐसी अकथ कहानी ।।अकल०।।२।।

अजब खेल अद्भुत अनुपम है,
जाकूं है पहचान पुरानी ।
गगनहि गैब भया नर बोले,
ऐहि 'अखा' जानत कोई ज्ञानी।।अकल०।।३।।

—अखा ।